INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL
ISSN NO : 2230-7850
IMPACT FACTOR : 5.1651 (UIF)
VOLUME - 15 | ISSUE - 7 | AUGUST – 2025

राजेन्द्र यादव के उपन्यासों में मध्यमवर्गीय राजनैतिक चेतना

रबीन्द्र सिंह
शोधार्थी , हिंदी– विभाग,
एस.एस.जे.वि.वि.अल्मोडा,उत्तराखण्ड।

शोध सारांश :

राजेन्द्र यादव मध्यमवर्गीय समाज के सुधारवादी अग्रणी विचारधारा से सम्बद्ध बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न रचनाकार है। इनके साहित्य साधना का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है। लेखक के उपन्यासों में सामाजिक व राजनीतिक चेतना का मर्मस्पर्शी प्रभाव देखा जा सकता है। उनकी रचनाएँ न सिर्फ साहित्यिक दृष्टि से मूल्यवान है, बल्कि वे समाज के विभिन्न पहलूओं को अनावरित करने में भी काबिल है। कथाकार ने अपने उपन्यासों के जरिए सामाजिक विविधता, राजनीतिक कुशासन और सत्ता के अपव्यय जैसे विकट दृग्विषय को रोचक ढ़ग से उकेरा है। इसके उपन्यासों में राजनीतिक चेतना का उमंग मुख्य रूप से मध्यमवर्ग में दृश्यमान होता है। जिसमें मध्यमवर्गीय समाज के लोगो को राजनीतिक के हाशिए पर सदैव खरा उतारा गया है। सियासत के चलते बेहतर भविष्य की चाह में मध्यमवर्ग का जीवन ज्यों का त्यों अप्रभावित रहता है। हालांकि राजनीतिक चेतना आधुनिक समस्याओं और सियासत में व्याप्त कुचक्रो से उन्हें अवगत कराता है। साहित्यकार द्वारा अपनी रचनाओं में राजनीतिक व्यवस्था के प्रति मध्यमवर्गीय जनमानस के नैराश्यभाव को रेखाकिंत किया है तथा राजनीतिक बंदोबस्त में आच्छादित भ्रष्टाचार और अन्यापूर्ण शासन का मुखालफत किया गया है। लेखक ने अपने सम्पूर्ण उपन्यास 'सारा आकाश ' से लेखक लेकर 'एक था शैलेन्द्र' में अलग–अलग चरित्रो के माध्यम से स्पष्ट किया है कि किस प्रकार जुर्म और सियासत एक –दूसरे पर टिके रहते है। किस तरह उन्होंने राजनीति में सक्रिय रहते हुए सत्ता के दुरुपयोग व अन्याय के खिलाफ आवाज उठाई है। तथा सियासत में व्याप्त अवसरवादियों एंव भ्रष्टाचार का पर्दाफाश करने के साथ–साथ राजनीति संलिप्त अपराध के गठजोड़ का भी गहराई से निरीक्षण किया है।

मूल शब्दः – राजनीतिक, मध्यमवर्ग, संलिप्त, मर्मस्पर्शी, भ्रष्टाचार हाशिए, चेतना।

शोध आलेखः –

राजनीतिक चेतना किसी व्यक्ति को अपने अधिकारों और जिम्मेंदारियो के बारे में जागरूक करती है तथा जन मानस को अपने समाज और दुनिया को उत्कृष्ठ बनाने के लिए उत्साहित करती है। यह देश, प्रान्त की वह नीति होती है जिसके द्वारा प्रजा का शासन व पालन किया जाता है। सही मायने में राजनीति का मतलब यही है लेकिन आधुनिक समय में यह विपरार्थ दिशा की ओर उन्मुख हुए जा रही है। जहॉ लोग राजनीति को स्वार्थपरक नजरिए से अवलोकित करते है। एक साहित्य ही है जिसके द्वारा रियासत की राजनीतिक अच्छाई बुराई को सूक्ष्मता से उभारा जाता है। हर एक देश प्रदेश के साहित्य में उसके समाज का प्रभाव स्पष्ट रूप से दृष्टिगौचर होता है। साहित्य सदैव मानव हित की बात करता है। एक साहित्यकार अपने उन विचारों और अनुभूतियों को साहित्य रूप में पिरोता है जिसमें कही न कही मानव हित की भावना मौजूद

होती है। अपने समाज और उसमें घटित होने वाली स्थितियों कों संवेदनशीलता एवं गंभीरता से अवलोकित करते हुए साहित्यकार साहित्य की रचना करता है। राजनीति के प्रति लेखक का मंतव्य है कि व्यक्ति को उसे भली प्रकार समझ लेना चाहिए ताकि वह उचित मार्ग से उसकी ताकत का उपयोग कर सकें और किस प्रकार अपनी समस्याओं के जंजाल को काट कर आजाद हो पायें, यही राजनीतिक जागरूकता होने का प्रमाण है। प्रत्येक जन का चुनावी नीति के प्रति दृष्टिकोण पृथक होता है।

लेखक के रचनाकाल का समय वह था जब भारतीय जनमानस में स्वतंत्रता की लहरें अपनें पूर्ण आवेग में उद्वेलित हो रही थी। येन कैन प्रकारेण स्वतंत्रता प्राप्त करना ही प्रमुख उद्देश था। उस लक्ष्य को प्राप्त करना ही उस देश की राजनीति का मुख्य पहलू रहता। उपन्यास 'एक था शैलेन्द्र' में नायक शैलेन्द्र जिसकी रगों में देशभक्ति कूट–कूट कर भरी रहती है उस नौजवान के खून में देशप्रेम के प्रति एक उमंग है। वह विदेशी राजनीति का बहिष्कार करता है तथा प्रत्येक नौजवानों को समाज में बढती सियासती जंग के प्रति सजग रहने की सलाह देता है तथा अंग्रेजी कुरू शासन द्वारा स्थापित औधोगिकी और उनकी चाटूकारिता के खिलाफ आंदोलन, जुलूस, बगावत करता रहता है। वह अंग्रेजी षड्यंत्रकारी शासन का खण्डन करता है। उपन्यासकार ने अपने राष्ट को गुलामी बेडियों से बाहर निकालने के लिए उपन्यास के नायकों के भीतर उनके तिलिस्म को उभारा है।''जिस तरह सुभाषचन्द्र बोस के पलायन की रोमांचक कहानी रोंगटें खडे कर देती थी, सन् बयालीस का विद्रोह भगत सिंह के दिनों की याद दिला रहा था, उसी प्रकार किशोर शैलेन्द्र के जोशीले राजनीतिक उमंग को बखूबी मुखरित किया गया है''1। शैलेन्द्र का क्रान्तिय दल अपने देश में अंग्रेजी सत्ता को प्राथमिकता नही देना चाहते थे, स्वाधीनता के अन्तिम दिनों में मुस्लिम लींग और कांग्रेस के बीच वैमन्यस्य हो जाने पर साम्प्रदायिकता की आग भडक उठी थी। हिन्दू मुसलमान के पृथक गुट बनने लगे थे, इनके बीच फूट, बिखराव का कारण पश्चिमी राजनीति थी। जो दोनों भ्रात्र समुदाय को लडाकर अपनी झोली भर रही थी। अपने वतन की सियासत को सही मार्ग की ओर उन्मुख करने हेतु अथवा एक कुशल पथ के निर्माण के लिए व्यक्ति के लहू में देशप्रेम की भावना होनी चाहिए। यह किसी से अछूता नही है कि यह तथ्य असत्य है। यह पारदर्शी है। हमारी पूरी सक्रियता ही राजनीतिक अर्थव्यवस्था का प्रतिबिंब मात्र है। व्यक्ति के विचार उसकी राजनीतिक और आर्थिक परिस्थितियों से आकर उत्पन्न होते है जब किसी समाज में सियासती जागृति नही होती तो उसे झूठी चेतना का शिकार होना पडता है। जिसका वास्तव में कोई अस्तित्व नही होता,समाज की ऊँच–नीच तथा गरीबी अमीरी को सदियों तक भगवान की देन माना जाता रहा है। क्योंकि राजनीतिक बोध की शून्यता में लोगो ने उन्हीं विचार धाराओं को सच मान लिया जो अभिजात्य वर्ग व तात्कालीन शासको ने जनता में प्रचारित करवाए, राजनैतिक चेतना के अभाव मे ही अधीनस्थ लोग अपनी अधीनता को अंगीकार किये रहते है उन्हें अपनी यथार्थता की अनुभूति ही नही हो पाती है। जैसे ही शासन ने सम्पूर्ण देश मे कानूनी राजनीतिक जागरूकता का विस्तार किया तो शनैः शनैः मानवीय चेतना का वास्तविक विकास होने लगा । उन्हें अपने अधिकारों की शक्ति की अनुभूति होने लगी। यह सियासत बोघ सभी के लिए समान सिद्ध हुई। ऊँच नीच, अमीरी–गरीबी का भेदभाव कम होने लगा, सभी वर्ग को समाज में बराबरी का अधिकार मिलने लगा, न कोई छोटा, न कोई बड़ा सभी को उसके न्यायिक अधिकारों से समानता प्रदान की गई। लेकिन समाज मे इन्हीं अधिकारों के बदौलत इन्सान अधिक ऐश्वेर्य समेटने लगा, धीरे–धीरे सुख–सुविधाओं के चलते व्यक्ति अपनी चेतना विलासिता की ओर उदीयमान होने लगा और अच्छी राजनीतिक चेतना बुरी चेतना में परिवर्तित होने लगी और समाज मे राजनीतिक अधिकारो का दुरप्रयोग होने लगा जिससे बेहतर पॉलिटिक्स भ्रष्ट राजनीति की ओर अपनी जड़े गढ़ाने लगी। जबकि''जनता की प्रगति यौवन पर आती हुई बाढ़ है जो बाधाओं को केवल उपेक्षा की दृष्टि से नही देखती बल्कि उन्हें चूर–चूर कर देना बलपूर्व हटा देना जानती है''2। देश के अपमान के प्रति जोश होना चाहिए लेखक कहते है कि''जब क्लास रूम में श्यामपट्ट पर लिखा हुआ 'जय हिंद' मुस्लिम लड़को द्वारा मिटा दिया जाता और उसके रचना पर 'पाकिस्तान और तकसीमेहिंद' दो शब्द लिख दिए गए, तब नायक शैलेन्द्र अपने देश की शान को बढ़कर रखने हेतु कॉलेज प्राचार्य के सामने ही उसे मिटाकर 'जयहिंद' लिख डालता है। इस जोशीले स्वभाव तथा देश प्रेम की भावना को देखकर संघ के लोग इनसे काफी प्रभावित हुए।''**3** ऐसे संघर्ष के फलस्वरूप हिंदी साहित्य में राजनीतिक चेतना एवं स्वाधीनता प्राप्ति की भावना की नई दिशाएं विकसित हुई, अतः उपन्यासकार का भी इस राजनीतिक चेतना और स्वतंत्रता प्राप्ति के जज्बे से प्रभावित हो जाना स्वाभाविक ही था।

किसी भी महान राजनीतिक क्रान्ति को उत्पन्न करने में तत्कालीन परिस्थितियों का बड़ा योगदान होता है, युग की महती जरूरत की पूर्ति ही आन्दोलन को विस्तृत रूप देने में सहायक होती है। सन् बयालीस में अंग्रेजी राजनीति को जड़ से उखाड़ फेक देना तथा उसकी कैदी जंजीरों को तोड़कर आजादी प्राप्त करना सभी जोशीलों का उद्देश्य हो गया, जिसमें सभी ने बढ़चढ़कर भाग लिया, अनेक क्रान्तिकारी आन्दोलन तथा जुलूसों का आगाज किया गया। जगह–जगह नारे बाजी कर अंग्रेजी भष्ट कुरू राजनीति का बहिष्कार किया गया। प्रारम्भ से ही भारतीय मध्यमवर्ग अंग्रेजी कूटनीति का विपक्षी रहा है। यह राजेन्द्र यादव के उपन्यासों में स्पष्ट द्रष्टव्य होता है। ऐसे में उपन्यास का पात्र रजनीश को माध्यम बनाकर लेखक अपने विचार प्रकट करता है कि ''क्रान्ति में विश्वास मैं भी रखता हूँ किन्तु साथ ही इस बात को नही भूल सकता कि प्रत्येक क्रान्तिकारी के नैतिक चरित्र में दृढ़ता पहली बात है। उसे अपने भीतर विश्वास होना चाहिए अन्यथा वह असफल क्रान्तिकारी होगा और मैं समझता हूँ आत्म विश्वास ही नैतिक चरित्र का अनुपेक्षणीय स्तम्भ है। इसके लिए मैं गांधी जी के सिद्धान्तों का कायल हूँ''4।

ऐसा नही कि पश्चिमी राजनीति किसी को पसन्द नही आयी बल्कि इसमें भी कई भारतीय संलिप्त थे और उन्होने अपने ही लोगो का बहिष्कार किया हालांकि स्वतंत्रता के बाद भी काफी सफलता की प्राप्ति हुई। फिर भी जिस तरह फूल बेचने वालों के हाथों में अक्सर खूसबू रह जाती है उसी तरह पश्चिमी राजनीति के नष्ट होने के बाद भी कही न कही भारत मे भ्रष्ट राजनीति अपने पाँव पसार रही थी। जो आज आम जन के लिए दमघोंटू बना हुआ है। किस पर विश्वास करे, किस पर नही इसका पता लगा पाना मुश्किल सा लगने लगा था। जैसे शेर की खाल में गीदड़। ऐसी है अपनी नैतिक अखण्डता मे चूर उपन्यास 'उखडें हुए लोग' के पात्र 'नेता देशबनधु' जिसकी सिर्फ वाणी में सत्यता है परन्तु विचारो मे भ्रष्टता लोगो को अपनी बातों से इस तरह मंत्रमुग्ध करता है, जैसे अभी अमृत पिला दे। वह खादी सफेद पोशक की आड़ में जनता को धोखे में रखता है। हांलांकि मदद भी करता है परन्तु उससे अधिक आम जन को गुमराह करनें की चालें चलता है। उसके वादे हमेशा वादे ही रह जाते है। अब जब मिल में मजदूर लोग अपनी मांगो को लेकर हड़ताल करते है तो देशबन्धु बाहर से अपने हिमायती भेज कर वहाँ उग्रता फैलाते है और वहाँ मजदूरो में गोली बारियाँ चलने लगती है। जिसमें कई घायल तथा कुछ लोगो की जान चली जाती है। तब देशबन्धु कहता है ''पाचं ही क्यों मरे! पांच हजार क्यों नही मरे? और मजदूरों के सामने झूठ के ऑसू रोता है लेकिन अन्दर ही अन्दर उनकी छाती पर दाल दलता है''5। ऐसे हमारे राजनेता जो कूटनीति में लबालब रहते है उनके खाने के दॉत कुछ और दिखाने के कुछ और होते है। उन्हें थोड़ा भी तरस नही आता कि ''हम लोग इकट्ढ़े होकर जाते है, झोलियाँ बनाकर हडतालियों के लिए भीख माँगते है। शरद बाबू आपकी आँखों में आंसू आ जायेगा, जब आप चार–चार, पाँच–पाँच साल के दुधमुँहों बच्चों को भूख से बिलबिलाते देखोगे, औरतो की आँखें गड्ढो में घूस गई है। आदमियों की आवाजें गलों से नही निकलती है लेकिन मिल मालिक को जरा भी दया नही।''6 मिल मालिक कोई और नही नेता देशबन्धु जी का बेटा सत्या है। उसी के नाम से सत्या मिल चलती है, जिसमें हजारों मजदूर कार्य करके अपने परिवार का भरण– पोषण करते है। लेकिन घटिया मानसिक स्तर के पूंजीपति सत्ताधारियों के चलते साधारण जनता का शोषण होता है। मध्यमवर्गीय जनमानस सदैव राजनीति का सिर्फ बाह्य पृष्टभूमि देखता है जो झूठी परत से आच्छादित रहता है ''तालाब का पानी ऊपर से शान्त रहता है लेकिन उसमें चलने वाली मछलियों का द्वन्द कितनी तेजी पर है इसे सतह देखने वाला कभी सोच भी नही पाता है''7।

वर्तमान मध्यमवर्गीय भारतीय राजनीति ऐसी ही अपनी पहचान बनाने लगी है। उसकी पारदर्शिता का अपना कोई वजूद नही रहा, वह कहता कुछ और करता कुछ और है। तब वह संबंधित नौकरी का मसला हो, भूमि, साक्षात्कार, वितरण, दस्तावेज या अर्थ विषयक मसला हो। सभी में चापलूसी, घूसखोरी भाई–भतीजावाद व पक्षपात राजनीति संलिप्त द्रष्टब्य होती है। उपन्यास में नायक समर नौकरी हेतु एक भर्ती में जाता है। जिसमें क्लर्क, मजदूर और बढई की आवश्कता रहती है। प्रायः सभी नौकरियो के आगे चॉक से क्रॉस के चिन्ह लगे थे बढई के आगे लिखा था–दस बढई, मजदूरो के आगे था–पचास मजदूर और क्लर्को के आगे था–तीन क्लर्क। अज्ञाह आश्र्चय से ''मेरा मुँह खुला रह गया तिरसठ आदमियों की जरूरत है और तीन हजार आदमी की भी की भीड़ यहाँ जमा है दिल जैसे चमक गया , मैं सिर लटकाए घर लौट आया, इस अथाह भीड में मेरे लिए कोई जगह नही है इन हजारों लोगो मे से कोई एम्प्लायमेंट ऑफिसर का भांजा होगा, कोई भतीजा होगा पहले उनके

नाम जाएँगे या मेरा''8। समाज की भाई– भतीजावाद या अन्य विभिन्न प्रकार की राजनीतिकों को आम जनता पार्टी भी बखूबी जान चुकी है। राजनीति के प्रति वर्तमान युवा का व्यवहार नकारात्मक होता जा रहा है। मध्यम वर्ग इस चालाक राजनीति से क्षुब्ध है। आज प्रत्येक देश प्रदेश की जनता को सच्चरित्रता वाली राजनीति चाहिए। जिसमें पारदर्शिता हो, जिसका नेता सदाचारी व्यक्तित्व रखता हो, लेकिन वर्तमान का राजनीतिज्ञ, राजनीति का मूल्यांकन खराब दृष्टिकोण से करता है। वह जनता के साथ छलावा करता है। बातों को स्पष्ट नहीं करता तोड़ मड़ोड़कर बातों से अपनी नेतागिरी के जय जयकार करवाती है। उनके बातों से ऐसा लगता है। कि यर्थाथ में यह पारदर्शिता, सत्यनिष्ठा लगता हो लेकिन असल में वह रहता नहीं है। एक भ्रष्ट राजनीति का आंतिरिक द्वन्द्व एक शांत तालाब की तरह खामोश दिखाई देता है। वह शुद्धता को नहीं प्रदर्शित कर सकता क्योंकि उसके रगों में फरेब सियासती ताकत का नशा बैठा है। जैसे ''अफीम के नशे वाला व्यक्ति को तलब के समय जैसे अफीम के सिवा कुछ भी नहीं सूझता''9। उसी तरह राजनेता भी अपनी झूठी राजनीति पर सत्यता की लीपा पोती करके उसे पवित्र बनाकर जनता के सम्मुख गढा देता है। जो वस्तुतः यर्थाथ द्रष्टब्य होता है। समाज का दृष्टिकोण चाहे जो भी हो लेकिन राजनीतिज्ञ तो ''अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बने रहते हैं''10। ''सचमुच आज की मध्यम वर्गीय सामाजिक व्यवस्था में जीवन का संघर्ष इतना विषम और कठिन हो गया है कि स्वतंत्र रूप से आपके व्यक्तित्व का विकास हो ही नहीं पाता है। व्यक्तित्व के किसी हिस्से पर अंकुश रख कर किसी को कुचलकर किसी आवश्यक हिस्से का जबरदस्ती विकास करके आपको अपनी इच्छा के विरूद्ध उसे तोड़ना मरोड़ना और ढ़ालना पड़ता है''11। यह भी पूँजीपती राजनीतिज्ञों को नहीं अखरता। यदि आप सत्यवादी है और अन्याय को विरोध करते है तो लोभी लालची समाज द्वारा आपको दबाया जायेगा कुचला जायेगा मध्यमवर्गीय समाज में राजनीति अब भ्रष्टाचार का केन्द्र बन गया है। इस मध्यवर्गीय समाज में राजनीति को बुरी दृष्टिकोण से देखा जाता है। यहॉ कुछ व्यक्तियों का विश्वास हिंसा में होता है, तो कुछ व्यक्तियों का विश्वास अहिंसा में, वर्तमान में हिंसा की ओर अधिक रूख देखा गया है यद्यपि अब 'जिसकी लाठी उसका भैंस' कहावत पुराने जमाने की मानी जाती है। उसे अब सभ्यता काल में मान्यता देना ठीक नहीं समझा जाता, पर व्यवहार में हिंसात्मक प्रकृति विघमान है।राजनीति में अधिकतर आधुनिक दौर में यही देखने को मिल रहा है।यघपि पोलिटिक्स में कुछ ईमानदार, निष्पक्षवादी नेतृत्व करने वाले राजनीतिज्ञ भी उपस्थित होते है,परन्तु बहरों के साथ वाणी जुबा मृत हो जाती है और सियासती राजनेता अपने अधिकारों के दुरूपयोंग में लिप्त रहते हैं। अधिकांश प्रसिद्धि प्राप्त राजनीतिज्ञ बलात्कारी, लूट, फरेफ, अत्याचारी, ढोंगी निकलते हैं। उससे पहले वो खद्दर व तिरंगे की आड़ में अपनी हिंसात्मक प्रवृत्ति को दबाये रखते हैं और बाह्य रूप से सफेद पारदर्शिता का चोला पहनकर खुद को सत्यता का सेवक बताता फिरता है व आम जनता को गुमराह किये जाता है। जिससे भावी नौजवानों में राजनीति के प्रति भरोसा उठने लग जाता है। एक राजनीतिज्ञ को ईमानदार होना चाहिए सिर्फ बाह्य परिस्थितियों से ही नही मनः स्थितियों से भी उसे ईमानदारी से देखना चाहिए, एक नेता ही नही अन्य भी ''हिन्दुस्तान में खासतौर से जिस समाज में रहते है, उसमें ईमानदार होने के लिए मैं मानता हूँ कि बहूत बडे. साहस की जरूरत है लेकिन धोखा, बेईमानी राजनेता हो या अन्य, उसे गिरा देती है खोखला कर देती है''12। हालांकि मध्यमवर्गीय समाज राजनीति के प्रति क्रियाशील रहता है, परन्तु उनकी रणनीतियों के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण होता जाता है।

निष्कर्ष:

मध्यम वर्ग अपनी तत्परता के साथ जनतंत्र का अभिनन्दन करते हैं और अपने बेहतर भविष्य के विनिर्माण की उम्मीद लगाये रहते हैं। कि राजनीतिक रणनीतियॉ इस वर्ग का भी उद्धार करेगी, लेकिन लोकसत्ता धारी मध्यम वर्ग के लोगों का इस्तेमाल करके उन्हें हाशिए पर लाकर छोड़ देता है। यद्यपि राजनीति से उनके सामाजिक व्यक्तित्व का निर्माण होता है। वे अपने विचारों को बेबाकी से समाज के सम्मुख रख सकते है, उनकी सियासती उघमशीलता उन्हें भ्रष्टाचारी और सदाचारी में अन्तर स्पष्ट करवाती है। राजनीतिक हवा से कोई भी वर्ग अछूता नही रहा है, लेकिन मानवीय स्वार्थ प्रकृति के चलते नेतृत्वकर्ता का व्यक्तित्व भ्रष्टाचारी संलिप्तता में विलय हो जाता है। वह सिर्फ अपने वंश की तरक्की में लगा रहता है। जिससे आम जनता राजनीतिक व्यवस्थाओं से त्रस्त रहती है। मध्यमवर्ग को सिर्फ चुनावी दौर में तवज्जों दिया जाता है। उसके उपरान्त उन्हें नजरअंदाज किया जाता है जो कि वर्तमान राजनीति की यथार्थता है। यद्यपि राजनीति मे

क्रियाशील रहने से व्यक्ति का चहुँमुखी विकास सम्भव हो सकता है, लेकिन वर्तमान सियासत के भ्रष्टाचार कुप्रबंधन चक्र में संलिप्त होने के कारण मध्यमवर्गीय समाज राजनीतिक चेतना से प्रभावित रहता है।

संदर्भ ग्रन्थः

1–एक था शैलेन्द्र,राजेन्द्र यादव,वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली, 2006,पृष्ठ सं0 96,
2– वही, पृ0सं0 231,
3–वही, पृ0सं0 96,
4–वही, पृ0सं0 165,
5–उखड़े हुए लोग, राजेन्द्र यादव, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ0सं0 280,
6–वही, पृ0सं0 110,
7–वही, पृ0सं0 158,
8–सारा आकाश, राजेन्द्र यादव, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1959,पृ0सं0 106,
9–अनदेखे अनजान पुल, राजेन्द्र यादव, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1963, पृ0सं0 98,
10–वही, पृ0सं0 62,
11–उखडे. हुए लोग, राजेन्द्र यादव, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1956, पृ0सं0 205,
12–शह और मात, राजेन्द्र यादव, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1959, पृ0सं0 111,